JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्रधानमंत्री उज्जवला योजना का पर्यावरण संरक्षण में भूमिका।

रविन्द्र सुमन
शोध छात्र
समाजशास्त्र विभाग,ल0ना0मि0वि0 दरभंगा।

सारांश :

मनुष्य जन्म से ही प्रकृति की गोद में अपना विकास व जीवन व्यतीत करता रहा है। वन और धरती चारों तरफ फैली हरियाली मानव जीवन को न केवल प्रफुल्लित करती है बल्कि उसके सुख–समृद्धि से संपन्न करके स्वास्थ्य भी प्रदान करती है। वन संरक्षण के लिए सरकारी स्तर पर किए जा रहे कार्यों एवं उद्वेश्यों की पूर्ति के लिए जरूरी है कि देश के आम नागरिक भी अपनी भूमिका का निर्वाहन करें जिससे हमारी आने वाली पीढ़ी शुद्ध वातावरण में खुशहाल जीवन व्यतीत कर सके।

महत्वपूर्ण शब्द : PMUY, BPL,, स्वस्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण, ईधन स्वस्थ्य, ।

परिचय :

पर्यावरण का अभिप्राय समस्त पारिस्थितिकी या समस्त बहाए दशाएं होती है। जिसके चारों तरफ हम सभी घिरे हुए हैं। पृथ्वी पर सभी प्राणी, मनुष्य, जीव जंतु, पशु–पक्षी तथा प्राकृतिक वनस्पतियां अपने जीवन को जीने के लिए पूर्ण रूप से पर्यावरण पर ही निर्भर रहते हैं। पर्यावरण अनेक तथ्यों का मुख्यतः प्राकृतिक तत्वों का समूह है, जो जीव जगत को एकाकी तथा सामूहिक रूप से प्रभावित करता है। स्वच्छ पर्यावरण एक शांतिपूर्ण और स्वस्थ जीवन जीवन जीने के लिए बहुत आवश्यक है।

हमारा पर्यावरण आश्चर्यों से भरा हुआ है जैसे सुंदर आसमान, धुआं रहित साफ हवा, स्वच्छ पानी, हरे पेड़–पौधे, मंद हवाएं और बहुत कुछ एक समय था। जब हमारा पर्यावरण इतना ही सुंदर था जिसे निहार सके और साफ हवा में सांस ले सके। परंतु आजकल स्थितियां

बदल गई है। आज हमारे पास सांस लेने के लिए मास्क की जरूरत होती है। कुछ तस्वीरें हमें प्राकृतिक की सुंदरता के बारे में चौकाती है अनचाहे संसाधन के रूप में हम मानवों द्वारा प्राकृतिक की हत्या की जा रही है।

पर्यावरण संरक्षणः

पर्यावरण संरक्षण का तात्पर्य है कि हम अपने चारों ओर के आवरण को संरक्षित करें तथा उसे अनुकूल बनाएं क्योंकि पर्यावरण और प्राणी एक–दूसरे पर आश्रित है। पर्यावरण में जीवित और जीवित सभी चीजें शामिल होती है। जो हम अपने चारों ओर देखते हैं । यह पृथ्वी पर सभी प्रकार के जीवन को बनाए रखने में सहायता करता है जब हम पर्यावरण के बारे में बात करते हैं तो हमारा इशारा प्राकृतिक पर्यावरण की तरफ होता है ।

पर्यावरण के प्रमुख घटक :

1 **स्थलमंडल**

2 **जलमंडल**

3 **वायुमंडल**

4 **जैव मंडल**

मानव अपने जीवन के लिए पर्यावरण के घटक पर निर्भर होते हैं बदले में, वे रोज दैनिक क्रियाकलापों द्वारा पर्यावरण को हर रोज बदलते हैं हालांकि यह परिवर्तन बहुत खराब होता है कुछ मानवीय गतिविधियां जिनका पर्यावरण पर गलत प्रभाव होता है

1 अति जनसंख्या

2 तीव्र शहरीकरण और औद्योगीकरण

3 कारखानों और वाहनों से कार्बन उत्सर्जन

4 जल निकायों में हानिकारक रसायनों का बहाना

5 जीवाश्म ईंधन का उपयोग

साहित्य का पुनरावलोकन :

सुन्दर लाल बहुगुणा ने प्रकृति को बचाने के लिए 1970 में चिपको आंदोलन का अभियान प्रारंभ किया। भारत में क्रमिक रूप से कटते हुए जंगलों को देखने का पश्चात उन्हें भविष्य में पर्यावरण असंतुलन का एहसास तथा समाज पर इसके प्रभाव को समझा। उनके अनुसार यदि हम सभी को जीवन बचाना है तो इसके लिए पहला कदम पेड़ों को बचाना होगा।

थॉमस वेबर ने अपनी पुस्तक हैंगिंग द ट्री" द स्टोरी ऑफ द चीपको मूवमेन्ट (1987)" में बताया कि सुन्दर लाल बहुगुणा ने चिपको आंदोलन को एक वैचारिक आधार प्रदान किया। वे वनों की पुनः हरित करने के पक्ष में थे। उन्होंने वृक्ष लगाओं अभियान के ऊपर काफी जोड़ दिया। उनके अनुसार यदि हम वृक्ष लगाना प्रारंभ कर दें तो भविष्य में वृक्ष कटने से जो पर्यावरण का क्षय होगा, उसकी भरपाई हो जायेगी परिणाम स्वरूप पर्यावरण में संतुलन आऐगा। जो एक स्वस्थ जिन्दगी और प्राकृतिक के अस्तित्व को बनाए रखने के अति महत्वपूर्ण है।

एफ. के. सिलके ने अपनी पुस्तक **"द इनवायरोंमेन्ट"** में औद्योगिकरण के कारण पर्यावरण पड़ने वाले प्रभाव को स्पष्ट करते हुए बताया है कि सम्पूर्ण विश्व में पर्यावनण एवं विकास का एक महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दा है। औद्योगिकरण के कारण प्राकृतिक पर्यावरण तथा भौतिक पर्यावरण भी प्रदुषण से प्रभावित हो रहा है। वनों एवं जैव विविधता का संरक्षण पर्यावरण को स्वच्छ बनाये रखने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, इसके लिए सभी स्तरों पर वनों के संरक्षण एवं जैव विविधत को बचाने के लिए हर संभव हम सभी को प्रयास करना चाहिए। इसके लिए अत्यधिक खाली परे भूमि पर वृक्षारोपण को बढ़ावा देना चाहिए। उर्जा, वायु उर्जा तथा बायों गैस एवं जीवाश्म ईंधन अर्थात धुंआ रहित चुल्हों को बढ़ावा देकर तथा उन्हें प्रोत्साहित करके जलाऊ लकड़ी के उपयोग में कमी किये जाने की आवश्यकता है। वन जन्तुओं के आवास के संरक्षण के लिए विशेष क्षेत्रों का चयन कर कानून के माध्यम से स्थानीय एवं लुप्त प्रजातियों के संरक्षण पर देने की अति आवश्यकता है।

पर्यावरण प्रदूषण एक वैश्विक समस्या है और विकसित और विकासशील देशों में है प्रदूषण के परिणाम पर्यावरण गुणवत्ता में गिरावट, वनस्पति के नुकसान से साफ दिखाई देती है। यह जीवन समर्थन प्रणालियों के लिए खतरा है पर्यावरण स्थिति मानव विकास मापदंड और विभिन्न अन्य मापदंडों के संदर्भ में भारत की स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। भारत पर्यावरणीय विरोधाभास के विरुद्ध निरंतर विकास कर रहा है यहां देश में कुछ चिंताजनक स्थिति है।

1. 10% वन्यजीवों पर विलुप्त होने का खतरा
2. कृषि जैव–विविधता, अंक प्रतिशत घट गई है
3. आधे जल निकायों का जल पीने या अन्य किसी प्रयोग के लिए कहीं अधिक प्रदूषित है
4. 2\3 भूमि अपरदन की समस्या
5. वायु प्रदूषण विश्व में सबसे खराब है (कानपुर विश्व के सबसे प्रदूषित शहरों में से पहले स्थान पर है)

किसी भी परिवार, समाज एवं राष्ट्र के विकास में स्वच्छ पर्यावरण की भूमिका महव्तपूर्ण होती है। स्वच्छ पर्यावरण के द्वारा ही हम सभी को शुद्ध जल, शुद्ध वायु, शुद्ध भोजन एवं प्राकृतिक वनस्पतियाँ आदि प्राप्त होती है। एक स्वच्छ पर्यावरण से ही स्वस्थ व्यक्ति का विकास होता है। परिणामस्वरूप एक स्वस्थ समाज एवं राष्ट्र का निर्माण होता है। अर्थात एक स्वच्छ पर्यावरण धरती पर स्वस्थ्य जीवन को अस्तित्व में रखने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, फिर भी हमारा पर्यावरण मानव क्रियाकलापों, मानव निर्मित तकनीकी तथा आधुनिक युग के कारण से पर्यावरण नष्ट होता जा रहा है। परिणामस्वरूप सामाजिक, शारीरिक, आर्थिक, भावनात्मक रूप से पर्यावरण प्रदुषण हमारे दैनिक जीवन को विभिन्न रूपों से प्रभावित कर रहा है। यह किसी समुदाय या शहर या सिर्फ किसी एक राष्ट्र की समस्या नही है, बल्कि पुरे विश्व भर की समस्या है। पर्यावरण प्रदुषित के कारण वायुमंडल में कार्बन–डाईऑक्साइड में वृद्धि हो रही है। ग्रीन हाउस प्रभाव से वायुमंडल के तापमान में वृद्धि के कारण सागर तटीय शहरों के डुबने का खतरा, जलवायु परिवर्तन, वायुमंडल में ऑजोन परत के नुकसान से सूरज की धूप के साथ पराबैंगनी किरणों के पृथ्वी तक आने से कैंसर जैसी बीमारियों का प्रभाव, वायु, जल, ध्वनि, मृदा और जलय संसाधनों पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

वर्त्तमान समय आधुनिकीकरण से चारो तरफ घिरा हुआ है। मानव जाति द्वारा शहरीकरण एवं औद्योगिकीकरण के आंदोलन ने चिकित्सा, उद्योग तथा सामाजिक क्षेत्र को विकसित तो किया लेकिन प्राकृतिक धरोहर को कंक्रीट, इमारतों तथा सड़कों में तबदील कर दिया। भोजन तथा पानी के लिए प्राकृतिक पर हमारी निर्भरता इतनी अधिक है कि हम इन संसाधनों की रक्षा किए बिना जीवित नहीं रह सकते है। एक अनुमान के अनुसार सन 1990 के दशक में प्रति मिनट लगभग 70 एकड़ वनों का विनाश हो रहा था। पिछले तीन दशकों में विश्व में लगभग 20

प्रतिशत वनों का विनाश हुआ है। वनों के विनाश से एक और जीव–जातियाँ न केवल विलुप्त हो गयी बल्कि कई तरह की समस्याएँ भी सामने आने लगी है। सुन्दर संवेदी उपग्राहों से लिए चित्रों से ज्ञात हुआ कि भारत में प्रतिवर्ष 13 लाख हेक्टेयर भूमि से वन नष्ट हो रहा है। परिणामस्वरूप व्यक्ति अनेक बिमारियों तथा अनेक समस्याओं को झेल रहा है।

पर्यावरण संरक्षण का हमारा संकल्प तभी पुरा हो होगा जब पारिस्थितिकीय दबावों और न्याय की अनिवार्यताओं के साथ–साथ पर्यावरण जागरूकता पर ध्यान दिया जाये। इसके लिए केन्द्र, राज्य एवं स्थानीय सरकार के स्तरों पर विभिन्न सार्वजनिक प्राधिकरणों के संबंध में विभिन्न कार्यनीति के कुशल क्रियान्वयन की अति आवश्यकता है, वर्तमान तथा भाषी पीढ़ियों की विकास हेतु तथा पर्यावरणीय आवश्यकताओं को समान एवं सही तरीके से पूर्ति के लिए विकास योजनाएँ बनाए जाये, इसके साथ–साथ पर्यावरण संरक्षण के लिए पर्याप्त आर्थिक संसाधन उपलब्ध कराया जाये।

वर्तमान समय में हमारा समाज एवं राष्ट्र पर्यावरण के कारण अनेक समस्याओं को झेल रहे हैं जो एक चिंता का विषय है। परिणामस्वरूप अनेक पर्यावरण सम्मेलन आयोजित किए गए। स्कॉटहोम मानव पर्यावरण सम्मेलन सर्वप्रथम आयोजित किया गया। पृथ्वी सम्मेलन 1972 ई0 में, क्योटो सम्मेलन 1987 तथा इसी क्रम में संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वाधान से आयोजित हुआ। इन सभी सम्मेलनों के अंतर्गत पर्यावरणीय अवनयन में समस्त मनुष्य की भूमिका और आने वाले समय अर्थात भविष्य के संकटों की भी चर्चा की गई है।

वन नीति

वन किसी भी राष्ट्र का महत्वपूर्ण हिस्सा होते हैं, ये न केवल वाणिज्यिक मूल्य के लिए, बल्कि जीवन की गुण्वत्ता के लिए भी प्रतयाभूत होते हैं। इसलिए ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय वन नीति को महत्वपूर्ण माना गया।

सबसे पहले अंग्रेजों ने ही भारत की प्राकृतिक संपदा को आधिकारिक रूप से पहचान दिलाई थी, उन्होंने 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के दौरान वन नीति बनाने की प्रक्रिया शुरू की थी। लेकिन उनकी नीतियों का उद्देश्य ज्यादातर खुद को एक लाभप्रद स्थिति में रखना और संभव सीमा तक संसाधनों का दोहन करना था।उनकी योजना राष्ट्र की प्राकृतिक संपदा को यथासंभव लूटना था। इस दिशा में उनके प्रयासों का क्रम (अधिनियमों और नीतियों के माध्यम से) निम्न हैं:

- प्रथम वन संरक्षक वर्ष 1850 में अंग्रेजों द्वारा बंबई में नियुक्त किया गया था और पहला वन विभागा वर्ष 1864 में स्थापित किया गया था।
- आय बढ़ाने के लिए, वन अधिनियम 1865 लाया गया, जिसने वनों को, आरक्षित वन और अवर्गीकृत वन में बाँटा। आरक्षित वन स्थानीय लोगों की सीमा से बाहर थे और अवर्गीकृत वन बिना सर्वेक्षण वाले जंगल थे जिन्हें शताब्दी के अंत से पहले आरक्षित जंगलों के रूप में उत्तरोत्तर पुनर्वर्गीकृत किया गया और संशोधित वन अधिनियम 1878 में प्रावधान को शामिल करने के लिए प्रक्रिया को तेज किया गया था।
- वन अधिनियम, 1865 को पहली बार विभिन्न स्थानीय आबादी के प्रतिकार के लिए लागू किया गया था।
- 1878 के वन अधिनियम द्वारा, यहां तक कि गांव के जंगलों को भी बंद कर दिया गया था और लोगों के अधिकार को विशेषाधिकार में पविर्तित कर दिया गया था और वह भी शुल्क के साथ।
- प्रथम वन नीति वर्ष 1894 में लागू हुई थी, जिसने वनों के ऊपर कृषि को प्राथमिकता दी थी।
- अगला वन अधिनियम 1927 में लागू किया गया था, जिसने नियमों को और अधिक कठोर बना दिया और लोगों के विशेषाधिकारों पर और अंकुश लगा दिया गया।

स्वतंत्रता पश्चात् का कालः

- स्वतंत्रता के बाद, वानिकी के क्षेत्र को महत्व दिया गया था, लेकिन केवल कृषि और उद्योग के प्राथमिकता वाले क्षेत्रों के बाद।
- केंद्रीय वानिकी बोर्ड की स्थापना वर्ष 1950 में की गई थी और इसके बाद वर्ष 1952 में वनों पर एक राष्ट्रीय नीति बनाई गई थी। इस राष्ट्री वन नीति 1952 में कुलन भूमि के 33 प्रतिशत लक्ष्य को कवर किया गया था।
- **1952 की राष्ट्रीय वन नीति** को राष्ट्रीय वन नीति 1988 से बदल दिया गया था। इस नीति को पहलने की तुलना में बेहतर माना गया था, क्योंकि इसने वनों की कटाई और मिट्टी के संरक्षण के माध्यम से हमारे मौजूदा वनों के संरक्षण पर जोर दिया था।

पर्यावरण की महत्वता को समझते हुए सरकार ने अनेक कानून व नियम तथा कुछ प्रमुख योजनाएँ को प्रारंभ किया। जिससे पर्यावरण का संरक्षण हो सके। तथा व्यक्ति को जागरूक करने के लिए प्रत्येक वर्ष 5 जुन को पर्यावरण दिवस के रूप में मनाते है।

पर्यावरण कि संरक्षण हेतु प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 1 मई 2016 को उज्ज्वला योजना की शुरूआत की। हमारे देश में एलपीजी की शुरूआत 1955 में ही हुई थी और 2015 तक अर्थात 60 वर्षों के दौरान सिर्फ 13 करोड़ लोगों को ही एलपीजी कनेक्शन मुहैया कराया जा सका। दुसरी ओर एलपीजी का दायरा शहरी व कस्बे इलाकों तथा गाँव के समृद्ध वर्ग तक सिमटा रहा है। इससे स्पष्ट होता है कि हमारे राष्ट्र की अधिकांश महिलायें मिट्टी की चुल्हे पर लकड़ियों को जलाकर खाना पकाया करती थी। जिसके कारण वनों का कटाव अत्यधिक होता था परिणामस्वरूप ग्लोबल वार्मिंग तथा कार्बन डाइऑक्साईड में तेजी से वृद्धी हो रही थी। ग्लोबल वार्मिंग के कारण प्रकृति में बदलाव आ रहा हैं कहीं भारी वर्षा तो कहीं सूखा, कहीं लू तो कहीं ठंड। कहीं बर्फ की चट्टाने टुट रही है तो कहीं समुद्री जल स्तर में बढ़ोतरी हो रही है। ग्लोबल वार्मिंग से फसल चक्र भी अनियमित हो रहा है। जिससे कृषि उत्पादकता भी प्रभावित हो रही है। मनुष्यों के साथ–साथ पक्षी भी इस प्रदुषण का शिकार हो रहे है।

प्रधानमंत्री उज्जवला योजना के प्रारंभ होने से एक तरफ महिलाओं के स्वास्थ्य बेहतर हुए है तो दुसरी तरफ इस योजना के उपरान्त ग्लोबल वार्मिंग जैसी आपदाओं पर नियंत्रित करने में मदद मिल रही है तथा प्रति वर्ष कार्बन डाईऑक्साइड डत्सर्जन को 3.85 करोड़ टन कम किया है। इस प्रकार उज्जवला योजना का पर्यावरण पर प्रत्यक्ष रूप से प्रभाव पड़ रहा है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. Barua, Samir Kumar (2018, May)- Lighting up lives through coocking Gas and transforming society. Indian Institute of management, Ahemdabad, India.
2. Anand, V. (2018,May)- Two years of Ujjawala yojna Dalits in Western up land banefis restment against centre on other issues. First post
3. Bhaskar, U. (2018,March 25) Ujjawala Scheme : Indian ooil, others defer loan recovery up to 6 LPG relift.

4. Ahmad, N. Sharma S. and Singh, A. (2018). Pradhan Mantri Ujjawala Yojana step towrds social Inclusion in India. International Journal of trend in research and development
5. Cylke, F. K. (1993) : "The Environment", Harper Collins, New York
6. Weber, Thomas (June 5, 1990) : Hugging the Trees : The Story of Chipko Movement (India), Penguin Books
7. Sharma, A., Parikh, J., & Singh, C. (2019). Transition to LPG for cooking: A case study from two states of India. *Energy for sustainable development*
8. Ray, K. K. (2021). Slum Dwellers Perception Towards Ujjwala yojana, a Government Lead LPG Interention Programme in India: An Empirical investigation. Journal of Social Inclusion Studies